

श्री

श्री ५५ गोत्र वाचन ४०

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

DH262

॥

उत्तमध्यासिद्ध्या गाम्भ्याये
नीगननायकं ॥ ॥ कुरुता
दनं ॥ मत्तान्कवदन् निग
दिसंगुडिर्मन्त्रिणागपयन् ॥
कावसकृवं ॥ यद्यस्तविकव

ले

नान्नाथागाचरन्नाथं ध्यायि
धनमहं वक्त्रं मृदुमध्यादिह
य मखसाधनं ॥ कुर्यात्कवा
यद्यमधुलमध्यासं कुरुदिह
द्वजं लावयत्सुसमाहि न ॥

ॐ निविक्रमाधनं ॥ कुरुता कावजं यमं ॥ दन्ता श्रुतधुमधुलं ॥ कस्य मध्यासं कावं गनका
यं विरावयम् ॥ ॐ निविक्रमाधनं ॥ कुरुता कावजं यमं ॥ दन्ता श्रुतधुमधुलं ॥ कस्य मध्यासं कावं गनका
मर्त्यादिभ्यः शकं ॥ यमसं कावसं कुरु नं ॥ यद्यमधुलमध्यासं कुरुदिह
कमन्त्रिणां ॥ ॐ यद्यमधुलमध्यासं कुरुदिह ॥ ॥ ॐ निविक्रमाधनं ॥ मधुलमध्यासं कुरुदिह
शक्तिभ्यः शकं ॥ मधुलमध्यासं कुरुदिह ॥ गन्धदीनां शकं ॥ मधुलमध्यासं कुरुदिह ॥ ॐ यद्यमधुलमध्यासं कुरुदिह

॥ जाग ॥

स्वाहा ॥ शान्दस्य ॥ उं हूं स्वाहा ॥ पूज्यस्य ॥ उं कीं स्वाहा ॥ धूपस्य ॥ उं ॐ स्वाहा ॥ नैविद्यस्य ॥ उं गु स्वाहा ॥
 वल्युपहावस्य ॥ उं सर्वविघ्नो ॥ धनी ॥ रुद्र ॥ पूजा ॥ अथा कथा ॥ धामन ॥ प्रसार्य वदस्य ॥ रुद्र
 शुक्लाय वदस्य ॥ पञ्च ॥ अथा दिकं कृत्वा ॥ दिशान् रुद्रविघ्नमन्त्र ॥ उं वज्रकवचं लं ॥ रुद्र ॥ नाम १
 यज्ञ ॥ सत्त्ववर्जि मधाय ॥ लभयदि ॥ रुद्रमन्त्र ॥ पाकारं कीलकं धर्मं ययि मन्त्र कथा यथा क
 मं ॥ उं हूं स्वाहा ॥ वज्रमृदि दयं कृत्वा रुद्रकाय मन्त्र खलं ॥ अमावर्धं इति मन्त्र वलिवर्क ॥ स्वय ॥

रुद्राय वन्दनं ॥ उं हूं स्वाहा ॥ वज्रवन्धु रुद्रं वद ॥ रुद्रमवाय मन्त्र स्त्रिं ॥ अमावर्धनमर्कित्य व
 मा कालनया जयन् ॥ मधुर्ललाय कर्हं ॥ पृष्टकावा मन्त्र ॥ रुद्रं कं वै शयना दिव्यमनां मधुः
 स्थानिषु लावयन् ॥ रुद्रं वै शयना दिनां स्वस्त्वो ज मन्त्र ॥ उं हूं ४ स्वाहा ॥ उं वज्रमृष्टि मिद
 यं वज्रमर्जनी दय मन्त्र ॥ अमावर्धनं विधा कथा रुद्रदिपुष्टयथा क मं ॥ उं हूं रुद्र स्वा
 हा ॥ यमा म्बलम्वनं कृत्वा समालननायनं ॥ वज्रदुष्टा हा ॥ कीलाघनका जयन् ॥ ॐ मि

॥ आरम्भ ॥

यज्ञवक्त्रं॥ नमः॥ नमोहिनामन्त्रि सन्त्ययं कंसं स्मिन्॥ हृदयवद्विम्बं स्वतिजं यक्षः
 स्मिन्॥ आथ नडमिहि ४ पुष्टं कुं धातुकमस्य घृ॥ नमो विनं रुगवं कसाकायस्य स्थापत्
 धावजीकुसम्यमूडा रिवाकृथापोडयकृवं॥ मूडयावकृथासम्यमूडया सर्वदवमा ४॥ नो ३
 सववधनं कृथां कृत्वा दस्यमूडाया॥ सीमाययकृत्वा धन्यं वजावसम्यमूडाया॥ उंवजा
 कसर्ज॥ नमो हनमूडामन्त्र॥ उस्मां स्वाहा॥ थोडमर्ज॥ वज्राय सहे॥ पुवधनी॥ नववदनी॥ उ॥ न्वन ॥

वर्जविसहा ॥ गार्वनं वज्रमृष्टिद्वयवध्वा ॥ रुक्मनाथमर्मकभी ॥ वर्जकृमस्यमृष्टिद्वयवध्वा
धनमत्यया ॥ सूर्यमृष्टि समाधाय स्वनाहानन जाजिका ॥ कसायर्जलमादय मृदाया क
निकामना ॥ वामद द्विहाय निर्यावा रुग्णुष्टिपुष्पागम ॥ पानमृष्टि निविश्याना
सर्ववृद्धाय कासिका ॥ वज्रमृष्टि द्वयवध्वा ॥ मृगयावन शृखला ॥ रुक्मनाथमर्मकभी ॥ वर्जकृमस्यमृष्टिद्वयवध्वा
जागिनि निरिष्टयसंमिका ॥ वज्रमृष्टिद्वयवध्वा ॥ पृष्ठपृष्ठनथाजिका ॥ वर्जविसहा ॥ गार्वनं वज्रमृष्टिद्वयवध्वा ॥ रुक्मनाथमर्मकभी ॥ वर्जकृमस्यमृष्टिद्वयवध्वा

॥ आवा ॥

माखननसागिका ॥ सूर्यमृष्टिसमाधायस्वनाहाननडाइयम् ॥ पवित्रर्क्षकृत्कारणया
यादासयविकिरिक्ता ॥ उंयुवयसकावैपुकिक्त्वाहा ॥ पाशदेकीवदयाम् ॥ सत्ववकि
समाधायस्वनालावनकीविना ॥ हानकीवम्वसानमृडापुकिरिक्ता ॥ उंयुमिक्ताक्षरं
स्वाहा ॥ ममक्ष्मावमनैयदयं ॥ कमाङ्गागतीवयनार्थं ॥ पवित्रावसर्गविकी ॥ पञ्चयन्मसर्व
पूजाहिरगन्धशययवायकेश ॥ लास्याविनाम ॥ अगीकानृत्त्यामृडावदुष्टया ॥ गन्धय ॥ स्वर ॥

आमथाध्यादीयनेविशकायवा ॥ वन्दसूर्यावरोममूर्च्छि ॥ कमियार्ष्यावधाम् ॥
वामागमनैर्गकृत्वागस्यामृडाविधियम् ॥ उंरुं ॥ ४ स्वाहा ॥ वामिनकवदकृत्वाविनाकारं
समृष्टिमा ॥ उनल्यसूर्यामनविनामृडाविधियम् ॥ उंरुं ॥ ४ स्वाहा ॥ सूर्यामृष्टिसमृक्त
पुंरुंकारसमृडावय ॥ मुखानरगवानिस्वमागीकामृडापुकिरिक्ता ॥ उंरुं ॥ ४ स्वाहा ॥
दक्षिनकर्किदमरुवामहसम्मुनिअयम् ॥ उंरुं ॥ ४ सूर्याहसम्मुनिअयम् ॥ कवनधवयम् ॥

॥ कागा ॥

ॐ सनू रू स्वाहा ॥ यसा र्यग न्द्र हस्त रुद्र विहानथा डितां सहि सूर्य हस्त नवययन ॥
गन्धामुद्राया ॐ स्वाहा ॥ सूर्य मृष्टि समाभाय रूना हस्त नका जय ॥ यथा गुलि ॥ नूला
र्यनयममडा विधियन ॥ उग्रो स्वाहा ॥ कड वयममडा र्णो विनयर्मनी खया ॥ धममडा
विधायक यका कालमहात्मना ॥ उग्र स्वाहा ॥ सयममृष्टि समाभाय कगु कसमृष्टि गां दि
पमडा कदा हया हान दिपं पदायिका ॥ उग्र स्वाहा ॥ उमानमरु लिह स्वाग्नी गुप्ती मधमादि ॥ न्व ॥

स्वाहा

मो मडावानया ददयाने विद्यमद्युलायक ॥ ॐ स्वाहा ॥ वलिमडा रुवत्से वग्नी गुर्नी पस्व
संस्तिगा ॐ स्वाहा ॥ उग्र ॥ गहनमरु ॥ उग्र स्वाहा ॥ यच्छा भावयमरु ॥ सूर्य धव रु म
न्यल्य यच्छा वन्दे धावयन ॥ कमलाय वरुं पृथ्वी ॐ मागा थाय ० त्स्त्री ॥ मोहि नव
रुडलाल नालि मरु वरुं विमा र्को धर्मा विल्व वरुं रुका मय र्गु ॥ वरु मृष्टि कर्षवध
पृष्ठ पृष्ठ नका रुय ॥ रु रुय मरु वरुं रुका वन रुवा विन ॥ उग्र रुय यच्छा वसि मय वनि

॥ आगम ॥

धकिद्यः॥ नूमांवेलासूयाययावदावाधिमधुनिखदनानाम॥ इत्यादयामिपत्रमं वववाधि
विक्रं॥ यथाक्रियधिकानाथासंवाधकृमनिधयं॥ विविधंभीलंकसलंधर्मसंगहं॥ सत्वा
चक्रियाभीलवपुमिगुक्तामहं॥ इत्यु॥ वदधर्मवसयचक्रियवत्तामनूलावी॥ नूयायुक्ष
गुहियामिसम्बर्ववृद्धआगर्व॥ वरुद्यच्छवमूदावपुमिगुक्तामिक्तत्वम॥ मूर्योचगुहि
यामिमहावकृलविषय॥ वरुद्यार्नेपदायामिषकृत्वाकुदिनदिन॥ महावकृलशरग॥ स्व॥

समयवमनावम॥ वदधर्मपुमिगुक्तामिवाचं गुच्छक्रियानिकं॥ महायमकृलसंद्धमहा
वाधिममूदर्व॥ संवर्वसर्वमंडकं॥ पुमिगुक्तामिक्तत्वम॥ पुजाकर्मजथरुथासकृत्वा म
हाकर्मकृतावय॥ इत्यादयामियात्वायवमंवाधिविक्रमनूलावी॥ गुहिकंसम्बर्वकृत्वा
वसत्वार्यकावनाक॥ नूकिद्वंकावयिख्यामिन्मूकासावयाम्यहं॥ नूनास्वस्वानयिष्या
मिमत्वास्वाययिष्यामिविकि॥ • ॥ कुरुधहयिध्यात्वाकाशं कार्वनयर्हं॥ कथारुर्वं

॥ ॐ ॥

मविवाक नन दग्गविहायय ॥ उँव लाव गुद्धा ४ सर्व धर्मा ४ सा लाव गुद्धा ॥ नाम लय ०
दिमीमंकार्य धविवायय ॥ धर्म काय लय ध्यायां शुन्य कार्या वि लियम ॥ सीलाग काय यथा
क्यावायमाने विविक्त यम ॥ गीनिका मय था निरिथा सिद्धि रिज था कर्म ॥ ३४ ३४ ३४
३४ ३४ वज्र सत्व नव काय त्व धा सिद्धि ॥ ह ह ह ह ॥ ३४ कायना दस मथा ह ना धम हं ॥ व व व
व ४ व ४ ३४ ३४ गु धा ३४ ग द ह ध वी ॥ म म म म म ह ३४ माया म लि म क स व यिन ॥ म म ॥ म व ॥

गी नाना ॥ धन य व ल म धु ली ॥ का दि रि ध स र्क नं दि ॥ शि य व ल म धु ली सर्व व क न सी
य हं निष्ठा क नि यु य ३४ ॥ ह न ना हं का य म व म वा धि वि र्क व का व म ॥ व ३४ म धु ल म ल्य
व ३४ ३४ का य स र्क वी ॥ म म ॥ ध र्म व ३४ का य म द ह म ॥ उँ व ३४ गु द्धा सर्व धर्मा ४ व ३४ गु द्धा ३४
॥ व ३४ द वी स ३४ का य सि य वा त्म स ३४ ३४ ३४ ॥ म ल्या धा र्म सी ला ध य न र्क वी व सी ह
व ३४ ॥ स हा वा क र्क म लु म म द ह व ३४ ॥ उँ व ३४ मान ह ह ॥ ४ क का ३४ गा व र्क ना र्थ मा ल्या न

॥ आगा ॥

लावयसुधिः॥ किमूखयकुजनीबंधनायसनयहं॥ किनहंसिर्नकादंशुगावसुवजिकं॥
सत्वययंकमासिर्नयहालिङ्गधर्मैर्हिर्न॥ सविन्यासधर्मिथनगहं॥ रुर्निथनकुसुधर्ज
वामकुर्धधनुधर्वी॥ कयावकुद्धिधमनयथानादंरुमियकं॥ सवोलांकांलंसंपूर्धं॥ सखा २
लावकुसुमधुका॥ अद्यवशाहियदस्यकयालंसकटीकोटं॥ सिगलावधं॥ सखा लाकुमा
लयहाकुविहावयन्॥ द्वाविलिङ्गेकुशीयायांदावेरुल्लनगृह्णन्॥ पादमधुसुसनि ॥ स्वव ॥

कुवकुयमस्यलीयक॥ विहाववेसमासनमकुमगइदाहवन्॥ उंउरुयाहं॥ उंथागशुवा
४सर्वधर्माथागशुवाहं॥ उंहानकाथाहं॥ मिघकाकमुडयांकुयांदष्टां॥ लाकबंनवृध
४॥ जिह्वायामाघवीजनमकुधिमग्निव॥ कर्धं॥ नासकथावायुधुध्या४किमिजी
अथक॥ मायकृमाविह्वविर्वजगीवाधाविनिधसयन्॥ सन्दविकृमविजनवायां
समृपाकिर्नं॥ रुदयववकुटनन्यासंकृयां॥ सदावृध४॥ कृदाग्निवीजसंन्याहारिदसं

॥ आगम ॥

मृत्तुपुष्पाहिरं ॥ पुष्पाय दक्षिणं हस्तं भयसुधिसंस्थितं ॥ उदं स्वाहनिमकुक्षपक्षममा
धियायक ॥ कृतांगायकमाध्यात्वा सर्वं यत्नेन लंकृतं ॥ बहुवर्णं बहुधा वंदुस्त्वावतल्यिकं ॥
हायार्द्धं हायलाहकिं किं निजालमधिगं वन्दुवडी स्थिता सर्वा वनिर्यो हसं विष् ॥ भजे वनते
बलं ह्येह विवही स्थिता यव ॥ वाजहं सगयासीन ह सुग्यामलयशा रिता ॥ वस्त्रासु कृदयन्य
त्वा बहुवासा सुवृद्धिमान ॥ पागय नूनसंयं द्वा सुगमं ॥ पागय नूनसुलसुगानि वजावा ॥

११

॥ म्बव ॥

र्यसमाहि न ॥ वक्रस्य घनं विरुवो ॥ दानवा रुवमिशानं ॥ द्वावस्य यव ॥ हागानवजा रु
मियकल्यथ ॥ गत्सम रुव रुव नूमाजा ॥ या मउ गुधावदका रुव न ॥ वरुथं वादका र्दने
सुगं स्थान समये ॥ यव मवदका रुल्यं रुद र्दने घहाफ मम लुमडा दहि र्गगदा वामदहि
पा र्ग रु ॥ रुके कमा रुका हित्वा घट्ट सुगानिया मय न ॥ सुगाल्मभा द्वा द्वा हित्वा सत्रि म
मात्रिकां ॥ हा मय द्वा लं सुग कर्हि काथं ॥ समसि र्ग रुमि मात्रिकां हित्वा यव सुगं रुलाम

॥ अगा ॥ नका कमादिमाकां हित्वा वरु मा लो रु कामयन ॥ नमव रु मा हि कां हित्वा दाला वल्ल्या मु
 ५ मयन ॥ द द हि ४ य रु मा का रि व मा ई दि रु मि क ॥ न द हि द भ मा का रि ४ भ मा न रु मि रि च ट
 द हि ४ के या व व रि मि ४ स्या त्मा लो रि का रु यं ॥ वा च म धु ल मा का रि व ४ ॥ द हि र्ग र्म म लं ॥ घा न १२
 य त्म ल स का धि व रु ग मा स वृ धि मा न ॥ न स य व म हा ग न द्वा व रु व मि स रु न ॥ न रु द्वा व घ दि
 हा ग न मा का रु स्या रि धी य न ॥ न का मा कां प नि स म ल स रु स वा च म ४ ॥ य ल र वा रु व ४ ॥ ॥ म्ब व ॥

इ रु या न य व वि व रु न ४ ॥ न द हि मा कां हित्वा व दी स रु य या न ॥ य न ॥ न द हि र्मा रि कां हित्वा
 स रु धि दि कां ॥ द द हि र्वा ही का मा नं हा य घ दी य मा न न ॥ न द हि मा रि कां स रु न क मा का व रु ४
 वा न क रु म स य दि कां ४ ॥ द्वा व स रु वा व हि र्ग र्वा मा रु र्का का न रु स रु उ रु या या य य धा मा न स
 का धि या न य न ॥ न रु ४ य व य व का मि म ध म धु ल स रु द ॥ म ल स रु स रु न रु व रु व रु स रु रु
 रु म य न ॥ रि मा रि कां य रि स रु म ल स रु रु ल म य न ॥ न रु रु मा रि का हित्वा व रु रु स रु रु म य

॥ आगम ॥

न॥ कामिगेदियसूत्रेयसर्वकायं न प्रविष्टं ॥ वक्रावलिवक्राव मक्रामदयइमा ह्रिकृदावस्य ॥
मध्वसिंहसुतविवादिम ॥ यूर्ध्वार्द्धादिकाष्टपञ्चाशत्सुतमादि लाम ॥ ॐ नमो नमो ॥
दिकाष्टसिंहर्षासुतमादिसुत ॥ गङ्गावर्हिगङ्गावर्मावर्किं कवध्वजथाक्रम ॥ सिंहावावाम १३
हिवाभिवावासुतमादिलाम ॥ वक्रुर्द्धाष्टदेविनांसुतानिकल्यथम ॥ ॥ वक्रयाकाववाध ॥ ॥ ॥
वल्गानिमासुतमधुलाविसुमिगेमवन्दानिरावयदासुतानिम् ॥ कदाचक्रुर्द्धाष्टवक्रकनका

रुसमकलाकं कं देवादिनय मवधुभिर्विसमि ॥ वहिधायकाष्टपञ्चाशत्सुतानि विरु
वयम् ॥ गङ्गावर्हिगङ्गावर्मावर्किं कवध्वजथाक्रम ॥ नवावर्गनयध्वमकावववलावयम् ॥
विक्रिक्तासमूहवं मध्यागान्नयं लावयम् ॥ सर्वरावनयूर्ध्वयक्रमं लक्रिम् ॥ यद्वायाया
त्मकविद्यार्थिनिवक्रनायकं सपूहं मधुलं ध्यात्वा क्रुदयं रुसमाहिम ॥ उत्सुक्रमधुलया
नास्वस्वकजयथाक्रम ॥ वक्रिद्वावीववगालीक्रानिदि ॥ जगदर्थं क्रुद ॥ कृत्वास्यामनयनि

॥ आगा ॥

वसयन् वाधिविरुं रुसमूयादाय हानदृष्टियदायिनी ॥ संथाकायुक्तिके र्गवृद्धं वाधियदा
यिकां मे मुना वामन रथे वष्टे दक्षिण वस्तु थासि गयि नावृद्धा ॥ ४ ॥ कृष्णधिरुक्ता गोडयुधि दील
लीकम इयं कृमू ४ ट्क ॥ टं जानया सनं या सनं ॥ विकिर्णं कं विस्मयार्थं कलमभा विस्मि मां ॥ १४
सननयम कृष्ण निवा मघदा कृष्ण वधी ॥ यामन ववसन दक्षि वर्म निवासनं ॥ सर्वो वधगा
भंडुन वृक्ष विविगाजिगं ॥ १५ ॥ गान्धा सिंहिनी ४ दवी माय कूट विनिर्म मां ॥ सिगयि कपी गव ॥ ॥ स्व ॥

इव दं स्यल लिगा कृप संस्त्रि का ॥ इय कलाल वदनी यन ॥ गुका दृष्टी धि ॥ दक्षि ॥ १६ ॥
स्व नमू कृमू धु वामन कर्ज नि धास कं ॥ वक वस्तु स संविगां सर्व रुव धाम धि माद नि सर्व मा
यानम कृग्नि काला समय कं ॥ कृष्णार्थं व्याधि दी दवी युधि वी कृमू स कृवा ॥ सिगनी लं रुव
दं स्यम धु ला कृप संस्त्रि क ॥ द्वि रुजाम दह सि वर न रुक य वि रुषि का भग कृया सि कां शु ॥
इयं कमा सिन ४ वक वस्तु वि रु सि कां ॥ उल किनी व वायु व्यासग्नि मू कृवा ॥ १७ ॥ स्व व कृपी गव दं

॥ आगा ॥

हं ॥ धी धी ॥ वीरु समुद्रवा ॥ यवशभसंयुधं यमलशुधवायवा ॥ सत्वययं कमासाननकय
विवादिना ॥ उयि कलिमिविलसिधधिमिदिस्थितिनी ॥ वलिलशुकराहिमाकवविज
समुद्रवा वकपीनां वरुणोसा ॥ कया लमकूटाइका ॥ सत्वययं कमासीनां नकयविर्व
दिना ॥ कया लीवकिधिकृमि दक्रिधादिमिना ॥ वरुविजय संरुका ॥ खानया लिति ॥
नीलावृक्षसीका रुस ॥ सययं कया सनी ॥ ॐ सा न्यां स्वायय ज्ञास्यां कं कावविजसम् ॥ ॥ ॥

१५

वा ॥ पिमवधं ससा कालुगविद्वयसंन्वितां ॥ गदामस्वाययम भगभसुखसन्वितां ॥
मुक्तवधं ससा कालु कं काववीरुसंरुवा ॥ अग्नयं स्वायय दिनावायनकयनां ॥ ॐ हा
वीरु समुद्र नां मुक्तवधं मनावमा ॥ गदामस्वायय रुष्यां पृष्ठां कलि ससा हिना ॥ पि
कावविजसंजाकी ॥ निलवधं समुद्रलां ॥ नेमया स्वायय की ना निलवधं समुद्रलां
ॐ कं काव समुद्र नां रुष्यां लनगीर्णिकां ॥ गदामस्वायय ध्यावकवधं मनावमा ॥

॥ काग ॥

॥ ॐ कायविकसंरुमां धूयकक कधयध ॥ वायवीरुहाययनृत्वांरकवर्धमनावमा ॥ ॐ काव
वीरुसंरुमाः नृत्वामानकवदयं ॥ मद्यामरुहाययदीपायीकवर्धसमृद्धला ॥ ॐ काववीरु
संजाककायविसंवितां ॥ वायवर्ललीपी ॥ ०४ कव ४ कादिनिवगयम ॥ स्वस्वीरुसमृत्वां ११
न्नात्सत्यययंकसंस्तिमान् ॥ कयासर्ववर्धुर्वीरा ॥ कयालकमस्यस्ववादी ॥ गार्धकमसं
काननकयविवाकितां ४ कयालंसयहस्सन ४ दद्यालिंगधवामन ४ स्वदांगस्यहस्सन ४ ॥ स्व ॥

पिलवाममृद्धकम ॥ दवकुद्विजा ४ सयवर्धवाकाविव ॥ वीरमालि ४ सर्वनवामयानि
कयाटका ४ यवर्धकंकासंजागंशुलंकायंकरुवर्ध ॥ कका ४ धसमृत्वांन्नाम्नामार्ककमंवाकवि ॥
द्विमियदक्रि ४ यम्यशुल ४ स्वदाकवाकसं ॥ स्वकाववीरुतिजागस्याकवयवस्विनिजागम
रुल ४ निगवामकयमग ४ गमि ४ यनादिनी ॥ मस्यावाकसस्त्रा ४ सुशुगमि ४ यनादनीधक
लवीजानिमृल्लय ४ कर्धकं ॥ मस्यावकस्ति ४ मांघंकायधयनस्नी ॥ वज्रव ४ शुभययी

॥ ॐ ॥

मंदिमिथदकिनन्यसगु॥ मनालीगीमादविक्कवन्निजावयगनानि॥ रुमियवामकयम
छिकायामुछिउगानक॥ मस्याहंसस्मिमांछिंजागाछिउदभनकां॥ यश्चिमवकवसुना
म्राकययुजयिया॥ इकायावीरुसंजानंमस्याकुरुताननां॥ द्विमीयदकिरधयममंजुमुकाव
रिमकं॥ मस्याकुरुस्मिमांवकांनान्नामृकुककामिनि॥ रुमीयवामकयममिवीजीटिंवीटि
हाकुर॥ मस्याकुरुस्मिमांवकांटिस्वीजाकुरुयिधी॥ दकिरधमधमभुठंवाकां॥ यनाकुरु॥ ॥ ॥

१८

॥ ॥

मस्याकुरुस्मिमांनीलं०वीजाधकामिनीद्विमिथदकिरधयममृमिजाकुमजामलं॥ मस्या
कुरुसमासिनां॥ निलांकीछिंकिमयिया॥ रुमीवामयमहककालाहल॥ मस्याकुरुसमना
नीलांगीहकलालरी॥ ॐ॥ भानदकिरधयममंजुमुकाव
याकाहाननंजुयिधी॥ मरुववामाकुरुसमासीनामुक्ताहदवदस्मिनी॥ मरुवामकय
मरुवामीजाथामीजाकाथामवाकुरुकं॥ मस्याकुरुसमासिनांमुकावधुंथयंगिनि॥ ॐ॥

॥ कागा ॥ रुनिर्जागां कटाकटमक्षिणं ॥ बहु रूजं बहु वकं वामयमकमधुलं ॥ वामयवाकसुखं
धुमदक्षिणयानिनी ॥ वक्राक्षदक्षिणायवक्राक्षीकनकयमिं ॥ वक्राववीवनिर्जा
गां यमयामवधाविधी ॥ वक्राक्षानामकया ॥ वक्रावगां लावस्यमिं ॥ संकाववीकनिर्जाः २०
गां वामयलधविधी ॥ रुमवीकसमूहं शुक्रवर्धं समूहं लं ॥ शुक्रयश्चिभद्वानि
बहु रूजं विराजिणं ॥ यमावकाउमनसं मयवामशुक्रयालिधं ॥ रुद्रदयामवउकटा ॥ रुद्रव ॥

कटनकयविनाजिणं ॥ हलस्यदक्षिणा ॥ वामावीकनमहस्ववि ॥ शुक्रवर्धं विनया
वक्राकसुखिमुनिनि ॥ ॐ शुक्रयवामकया ॥ रुगङ्गागोवि कसंरवां ॥ मीखकृन्ददसं
कासं ॥ वनदाभूकधविनि ॥ समूवीकसमूहं शुक्रवर्धं महोदल ॥ मक्रदक्षिण
दाविनकयविरुचिणं ॥ सयाकविनद्वकृत्तकृत्तधविनि ॥ उल्लवामहसं
वाक्कायिणं ॥ लीलया ॥ सकस्यदक्षिणाय ॥ ॐ दायधीमां कसुनि ॥ कृदक्षि

नहस्तनवाभ्यर्च्योक्तवर्जिदां ॥ गुरुस्यगमकया ॥ श्रेष्ठिविजयनितिलार्कमा ॥ पिना ॥
 वामलगायष्टिदक्षिणासुधाविधी ॥ ॐ नमो नमो नमो ॥ धर्मी गमिषुसमूहव ॥ सव्य
 कथितकवजंवाभाकर्षिगालीलया ॥ यत्किमिसमांसवीरुमिंदस्य दक्षि ॥ धन्यसमू ॥ वा
 मगालं गावावक्ता ॥ ग्यामान्ददामकमर्षाधहस्तिका ॥ धूकाववीरुसंज्ञाकंकववमः
 गिनकादक ॥ धीगंवाभवमादक्षि ॥ धवीपूलकं ॥ कववदक्षिनया ॥ धवजापीगवशु ॥

२१

॥ स्तव ॥

मनी ॥ धान्यामकनिवामनदक्षि ॥ धनारुयमुदां ॥ कवववामकया ॥ श्रेष्ठानिनिहनि
 कयला ॥ हंकाववीरुनिकागाववशाकंधाविनी ॥ नैमत्याह नमंडुहृषंखवीरुसं
 रुवं ॥ वामरुर्जंवाविन्यादक्षि ॥ धदधुधाविधिं ॥ नृद्ववउकयात्राकनकुयविजिगं ॥
 मारुनदरुयवकधगनसमनिमं ॥ रुगस्यदक्षि ॥ धया ॥ धुवंजाललकधुनिन्यस
 का ॥ ग्यामवर्धंमहाकालिकया लमगां ॥ विपुलदक्षिनहस्तवामनक कया लका ॥ का

॥ आगम ॥

धन्यमीमहाहिमां ॥ वायुवर्मनिवासिनी ॥ रुक्मस्यवामयाश्चननकाकपियान्यसम
नकावर्धमहाकालीविष्णुलंकधनीसमं ॥ वायुवागनागनाङ्गुभगमीधविहसिः
मं ॥ शुक्रवर्धमहाकालं रुद्रवतीकनीर्मिमं ॥ वचंददक्रिधयानिवाभयासवनरु
धो ॥ सर्ववक्त्रनसंयुधं वत्तालंकनभखनं ॥ रुद्रदक्रिधयाभेधुनकल्यावि
रुसंरुवां ॥ वामलदक्रिधहस्यवामाकार्यिकनीया ॥ श्रीमन्महादेववनिनम्यां ॥ स्वन ॥

२२

प्र
२२
२२
२२

हननयविहसिमां ॥ वामकायसमूहनामूलखिधागिनीं ॥ सीमवर्धमहाका
लीहनयविनाक्रिमं ॥ उत्पन्नसर्वहस्यनवामङ्गलवावलंखिमं ॥ १० ॥ वरुधेवक
वक्रुवनीनयभकासुकं ॥ ॥ गुरुपूर्वादि कासुयुत्रसिमाङ्गादिरुनवेनेश ॥ सर्व
सर्वानाहयाभुद्रुद्रुविनाक्रिमा ॥ विभुनथागकखवदाहियानय ॥ ॥ रुद्रिमाः
॥ रुद्रिमावर्धपूर्वकासुयवस्त्रिक ॥ वामयाश्चिन्नासोम्यापिनालवक्रुधनिधि

॥ आगम ॥ वृंभानहिमलाह्वयः पीनवर्धं महाकलं ॥ वामस्तु कर्धं भादीरुं नकश्चिपुनधावि
 दीक्ष ॥ वायुकाष्टुविहया नकसंहावरुं देवाः ॥ वायव्येगास्त्रिंशामहनिनाधरु
 धानिदीनूनमुयश्चिमकाष्टुपिनवर्धं महाकलं वामया र्धं महानायायामहस्तासि
 ताकला ॥ उन्मलानेमलकाष्टुतीववर्धं महाकलं ॥ वामया र्धं त्रिंशत्तालाधूमाह्व
 मधानिनि ॥ कयालादकिरुकाष्टुपिकुर्वर्धं महाकलं ॥ वामया र्धं महानवश्रीकृष्णद ॥ चन ॥

१२

धुधानिदि ॥ काष्टुमालाककाष्टुममवर्धं महाकलं ॥ वामस्तुष्टानीनासकि धानिदीपम
 हावलादिविनातांभवसनमसंस्तीगाः ॥ खदाङ्गागयाशुक्कृपीनकर्कि धानिदि ॥
 पूर्वाग्नेयांनकनकाष्टुमिनवर्धं महावल ॥ यमन्नागस्यवामेष्टुपीनाकनकधानि
 दी ॥ यमारग्नयाकनकाष्टुसहद्येष्टुशुभाशिसिगः ॥ मृत्तिकागस्यवामस्तुसर्ववर्धं
 धवासिगा ॥ यमनेमलयामधानिलोचककुनामक ॥ यिगलागस्यवामस्तुनीलाः

॥ अंग ॥ लाघानिधीयश्चिमेसवाकाष्टरू॥ अकावर्हविषमक॥ गस्यवामखनादवित्रका
 लमश्चधनिधि॥ यश्चिमेवामकाष्टरूवकाकेलाभउत्कट॥ गस्यवामकुभाकध
 वकायचथदाकिनि॥ वायूरुवाकूवकाष्टपीना॥ यवनसंरुहक॥ गानरू॥ पशुयागी
 रुयानरूवकाधाधी॥ धनदभाकूवकाष्टपीनारु॥ पर्वभामेक॥ वामरूवगवकूउ
 वानारूदासधविधि॥ पूर्वभानारूवकाष्टसिगारूहउकवव॥ वामरूवकवामधु ॥ अंग ॥

२४

विनयिष्टधवाकला॥ ॥ मगययम्यवकासिमयदसम॥ बृहन्नशानुभाबधस्मभा
 नानियथाक्रमं॥ मृदुलाकवपर्वपी० रुकवसकृमि॥ सयाविभलेयागानिवृ
 रुकुकदवक॥ निर्यानांगकिंमिद्य॥ कवालम्वधायध॥ पीनाकावासरूय
 विम्ववर्हमहाकव॥ कधुवर्हकवर्वयनादिउकवभाद्ववीउसनकुर्वभा॥ १
 ववृहमुरुकूवहयय॥ पि० रुवकुवमुक॥ वकुवमुक॥ वकुविंसत्कयादानिपी

॥ आगा ॥

कामलपुवक ॥ उलकपुवकवन्धवायायक्रिदिसाधक ॥ गोमयेन्यधनानधकार्या
लाहिकमक ॥ नडानिवृषराहायुलबडाकधनिधी ॥ विन्द्यारुधधनीशुलसुना
गधानदिदसुसुविनि ॥ १ ॥ उज्जनीयधिमदमेधन्याकनरुयी ० क ॥ मुकविमे
मिक्कयालपुल्लहना ॥ माग्यायिपुकनामककर्कटकावसायन ॥ केलासि ॥
आवेन्यधनदिनेनरुनामना ॥ एडाधीरुमरुनहासववजधनीसिना ॥ वामरुगुध ॥ २५ ॥

वीदवीकयालविन्द्यार्यधी ॥ ३ ॥ थाम्यकालालीङ्गुधिमाला ॥ कलबीनक ॥
काकाधकानयी ० वेष्टादभकयानक ॥ उडधानसथनीयम ॥ द्यामालमन्दबो ॥ व
नारामानसिहावानाहीमहिषासिनी ॥ मीनाकभधनिवर्ककयालामगदायी ॥
दभनमिनदभसदनी ॥ ४ ॥ गुमान्यदविकाटमगुवरुनयि ० क ॥ कयालेडाद
भलिह्यनडागुधावकथा ॥ पूर्धमहमाउधु ॥ होमसिद्धिक ॥ माहन्दयवगुरु

॥ आग्न ॥

कुरुकुरुवेत्थारुमसिद्धिकः॥ साहन्दयवमगुलावेत्थायनजिगः॥ करिस्तुधुधवि
द्विवगोलायविसंस्त्रिमाः॥ कयालादिन्दुवावाभाहमवगीनविधनयेनि॥ ५
वत्रिगुमग्निकाः॥ ६०॥ कुवकुवमकः॥ कयालेष्टयकदमहिः॥ कवञ्जामघघुर्हि
कः॥ रगनमोविमबुद्धल्यगुमिकाभमयमकः॥ यलानयावोडोराधमादनयवमकः
॥ कोमाविदेयकोवकोमयुवोयविसंस्त्रिमाः॥ कयधवविन्ददादविमकिमावधविः॥

२६

॥ सचन ॥

धोवामनि॥

६

॥ अयलिकोनयकाः॥ होमावर्कनिम्बवायुसाः॥ सकर्मकाः॥ ६०
कुरुकुरुकयालेनिजाजिगः॥ कलकायाइकासिद्धिः॥ कविकः॥ भूवहिनकः॥ यवमहमक
टसुमात्राववगीनदि॥ माद्रुकायधिः॥ ममाकयालेविन्दायिही॥ वामनलगज
वकवकवेत्यविवाजिमाः॥ १ ॥ यथारगावायुकाः॥ रुइम्बवीवधुधविकः॥ कुरुमा
कयायी॥ कयान्यूनविममिः॥ वकालाहलरुलध्रुववाहुविमयवमनं॥ ममव

॥ काम ॥ ॥ १ ॥ विनायकस्तु वायव्यवर्हस्तु वक्रापीनकः ॥ वक्रानालासिगायिकाख
 भहस्तादिदवमी ॥ २ ॥ वीवाश्चक्रुस्तु कस्तुर्वकपालविईदयिनः ॥ नयगास्यां
 हस्तास्यां शुबखकृधावीदः ॥ वामडादिदवस्तु किशुवयाकुदायः ॥ वक्रधरक
 हस्तायाः ॥ स्वस्त्यहवद्वान्विनाः ॥ सर्वसर्वासनहयाकृत्वा कवनरुचिनाः ॥ रीति
 व्यामहानकृष्टयविनाः ॥ ३ ॥ समयवकाविनिष्ठा यकावयकृष्टान ॥ ॥ स्व ॥

मधुलं ॥ आकाशमधुलंदृष्टा हानमधुलमानर्यम् ॥ पूर्वकिर्नवविधिनाकृष्टा
 दाकृष्टनिदि कंदवगाश्च सैषां लाकिकानां विनायकः ॥ वक्रमृष्टिदृष्टवद्यावावनेमा
 रुमलादिना ॥ पर्वदिनमलायाहनीयवावदा ॥ संके ॥ उं आकृष्टदिहैरुद ॥ लाकि क
 देवगावयममृष्टानकृष्टः ॥ आगता नानुदवानामासनैः पुदायम् ॥ दार्हस्तासंघटि
 कृष्टयमाकावविकास्यम् ॥ उं गिष्टवक्रासनैः स्वाहा ॥ अननमृष्टानकृष्टः ॥ मि

॥ जोगा ॥

नवहं ऊह दिव्यान्वाव उमह लंमधगं ॥ दर्शयत्तमयमूडास्तस्व ऊव न्वसमूहवां ॥
वाम सिद्धिदिव्या गगन ऊद किनं क्रिययत् ॥ सर्वेषां माधु लयाना सा मा ग्य समाय
हवत् ॥ ४ ॥ उं हं ह ४ समय किस्व हृदय ऊ ऊ वं ह ४ समय स्तं समया हं ॥
यमा हानन संथा रुह गवि पि धि ना हा त्यां भूं ख न ना वध रय ना का षय मूहि
नं ॥ ह म म ला ध म मा था क्क ना थ स्य समया म न ४ ॥ उं जोगा न्व व ह ४ ऊ ऊ वं ह ४ ॥

१३

॥ मय ॥

समय स्तं समया हं ॥ उं हं ह ४ स्वा हा ॥ व ऊ व न्व ह हं न द्वा ह म ला ध म मूहि ना द ना था ॥
स्व समया म ना ॥ उं धा गा म्व वि ह ४ ऊ ऊ वं ह ४ ॥ समय स्तं समया हं ॥ व ऊ व नि व ना हा
न था जि ना ॥ इ व ऊ ऊ कि नि ह स्य ऊ ऊ वं ह ४ समय स्तं समया हं ॥ हान वि हान मूहि स्य
मा व यं धा व ऊ कि नी म ना ॥ उं धा व ऊ कि नि ह स्य ऊ ऊ वं ह ४ समय स्तं समया हं ॥ ४
प मा रु ह ऊ म्व वि रु सो व व ना व ऊ कि नि ह ४ ऊ ऊ वं ह ४ समय स्तं समया हं ॥ व ऊ

॥ अंग ॥

वन्धसमाधाय रुमला धनशुचिकावन्नाकावधसखायवधुल्या १८ समयमगा

॥ वधुलजाकिनिहृग्धजकूवैहाहा १८ समयस्त्वंसमथाहं ॥ १ ॥ वज्रव

धदृवद्याश्चमावाचनशुखला ॥ ॥ नाथनकथिमूडासिहृन्नासमयगा ॥ ३ ॥

सिहृजाकिनिहृग्धजकूवैहाहा १८ समयस्त्वंसमथाहं ॥ १ ॥ गामवमूडामव

धरुमलाधमशुचिकाविदिकाश्चशुचिरुवायामूडायकिहृन्ना ॥ ३ ॥ वाघज

३०

॥ नव ॥

किनिहृग्धजकूवैहाहा १८ समयस्त्वंसमथाहं ॥ सवमूडादृवद्यादिधाविस्त्रालन

यव ॥ नाथनकगामूडाकम्वकीसमयामगा ॥ ३ ॥ मूकिहृग्धजकूवैहाहा १८ समय

स्त्वंसमथाहं ॥ १ ॥ वज्रवधदृवद्यादिधस्त्रालनयव ॥ ३ ॥ लकिनिहृग्धजकू

वैहाहा १८ समयस्त्वंसमथाहं ॥ १ ॥ वज्रवधसमाधायशुखलागविकाभयक

॥ उजाकिनिहृग्धजकूवैहाहा १८ समयस्त्वंसमथाहं ॥ ४ ॥ मूदिवडाकूलि

॥ आगा ॥ कृत्वादिपनिसमयामगा ॥ उं दीपि धी दृग्ध ॥ ४ वंहा ॥ समयस्त्वंसमय ॥
 ॥ अ ॥ यगा ॥ निद्रिययास्य हृषि धी समया निगा ॥ उं दीपि धी दृग्ध ॥ ४ वंहा
 ॥ समयस्त्वंसमयाहं ॥ ६ ॥ वज्रवन्धसमा धायमूय लाभा वनथा गग ॥ मय ॥ ३१
 पागनवक न्नाकम्या यी ॥ समयानगा ॥ उं क म्या डि दृग्ध ॥ ४ वंहा ॥ समय
 स्त्वंसमयाहं ॥ ७ ॥ यसा सूर्या वदध ॥ रक्त विरुनसस्य ॥ यक स्या दिदिद ॥ न्वन ॥

वीना समया मनिनादिगा ॥ उं यक सी दृग्ध ॥ ४ वंहा ॥ समयस्त्वंसमयाहं ॥ उं डाम
 डि दृग्ध ॥ ४ वंहा ॥ समयस्त्वंसमयाहं ॥ उं व र्धु ॥ दृग्ध ॥ ४ वंहा ॥ समयस्त्वंसमया
 हं ॥ यसा र्या वदध ॥ रक्त विरुनसस्य ॥ यक स्या दिदिद ॥ न्वन ॥
 यामवगधा विनि दृग्ध ॥ ४ वंहा ॥ समयस्त्वंसमयाहं ॥ उं वृ धि वि धि दृग्ध ॥ ४
 वंहा ॥ समयस्त्वंसमयाहं ॥ उं मा सी दृग्ध ॥ ४ वंहा ॥ समयस्त्वंसमयाहं ॥ वगा

॥ आगम ॥ ॐ निसमाधाय यविकाभ्यध्यानाशुभम् ॥ उयाह लिङ्गागामानां सयसम्यग्ददः
 संयम् ॥ उं उं गुह्यम् ॥ उं उं वहासमयाहं ॥ उं उं लिङ्गम् ॥ उं उं वहासमयस्त्वं
 समयाहं ॥ उं उं मद्भ्यम् ॥ उं उं वहासमयस्त्वं समयाहं ॥ ॥ कपाल्यादिभिर्द
 वीनां पृथ्व्या उं उं लिङ्गम् ॥ ॥ उं कपालिका उं उं वहासमयस्त्वं सम
 याहं ॥ उं उं विहिम् ॥ उं उं वहासमयस्त्वं समयाहं ॥ उं उं कर्मादिभ्यम् ॥ उं उं वहासमयस्त्वं समयाहं ॥ ॥ ३२ ॥

हा ॥ समयस्त्वं समयाहं ॥ ॥ वज्रवन्धुदिकृत्वा हानविह्वलम् नमूक्ति
 मा ॥ उं उं वज्रलास्यम् ॥ उं उं वहासमयस्त्वं समयाहं ॥ ॥ वज्रवन्धुदिकृ
 त्वाप्यपसार्य गंधवचना ॥ उं उं वज्रम् ॥ उं उं वहासमयस्त्वं समयाहं ॥
 वज्रवन्धुसमाधिविद्या वमउं वस्ति मा ॥ उं उं वीथीम् ॥ उं उं वहासमय
 यस्त्वं समयाहं ॥ मयस्त्वं समयाहं ॥ उं उं वज्रगवाकसम् ॥ उं उं वहासमय

॥ कागा ॥

स्त्वंसमयाहं ॥ उं ख व न र वी य द ध ज ४ रुं वं हा ४ समयस्त्वंसमयाहं ॥ १ ॥ उं ग म्ही व
ना द द ध ज ४ रुं वं हा ४ समयस्त्वंसमयाहं ॥ उं गं हि व ना द द ध ज ४ रुं वं हा ४ समय
स्त्वंसमयाहं ॥ उं गी ना व नी य द ध ज ४ रुं वं हा ४ समयस्त्वंसमयाहं ॥ ३ ॥ उं य ०
४० वा र्ध द ध ज ४ रुं वं हा ४ समयस्त्वंसमयाहं ॥ उं य ट क्क नि य द ध ज ४ रुं वं हा ४ स
मयस्त्वंसमयाहं ॥ ४ ॥ उं व शु ध व द ध ज ४ रुं वं हा ४ समयस्त्वंसमयाहं ॥ उं व य ॥ म्ब ॥

३३

लान नी य द ध ज ४ रुं वं हा ४ समयस्त्वंसमयाहं ॥ ५ ॥ उं कि ड धा द ध ज ४ रुं वं
हा ४ समयस्त्वंसमयाहं ॥ ६ ॥ उं ऊ वा य ध पी य द ध ज ४ रुं वं हा ४ समयस्त्वंसम
याहं ॥ उं य ग्ना न नी य द ध ज ४ रुं वं हा ४ समयस्त्वंसमयाहं ॥ ७ ॥ उं म का व
ही य द ध ज ४ रुं वं हा ४ समयस्त्वंसमयाहं ॥ उं म क्क का मि नी य द ध ज ४ रुं वं
हा ४ समयस्त्वंसमयाहं ॥ ८ ॥ उं मि टि ला द ध ज ४ रुं वं हा ४ समयस्त्वंसम

॥ आग ॥ ॥ गार्ह ॥ उंटिक रूयधीयदृग्ध ४ रुं वंहा ४ समयस्त्वंसमथाहं ॥ २ ॥ उयिवनाटावद
॥ ४ रुं वंहा ४ समयस्त्वंसमथाहं ॥ उंकि कामिनीयदृग्ध ४ रुं वंहा ४ समयः
स्त्वंसमथाहं ॥ १० ॥ उंमवदाजामवदृग्ध ४ रुं वंहा ४ समयस्त्वंसमथाहं ॥ उं
विशुमयियेदृग्ध ४ रुं वंहा ४ समयस्त्वंसमथाहं ॥ ११ ॥ उंके का लाहल
दृग्ध ४ रुं वंहा ४ समयस्त्वंसमथाहं ॥ उंके लासीदृग्ध ४ रुं वंहा ४ समयस्त्वंसमथाहं ॥

३४

॥ म्व ॥

हं ॥ १२ ॥ उंनकयियदृग्ध ४ रुं वंहा ४ समयस्त्वंसमथाहं ॥ उंननूजधीयदृग्ध ४ रुं
वंहा ४ समयस्त्वंसमथाहं ॥ १३ ॥ उंथाववाहं धदृग्ध ४ रुं वंहा ४ समयस्त्व
समथाहं ॥ उंथवकिधीयदृग्ध ४ रुं वंहा ४ समयस्त्वंसमथाहं ॥ १४ ॥ उंइष्टा
कला लदृग्ध ४ रुं वंहा ४ समयस्त्वंसमथाहं ॥ उंदवमिनीयदृग्ध ४ रुं वंहा ४
समयस्त्वंसमथाहं ॥ १५ ॥ उंधिकावधावदृग्ध ४ रुं वंहा ४ समयस्त्वंसमथाहं ॥

॥ आग ॥

हं॥ उं धि व ला वि दी य द्ध ४ ४ ४ वं हा ४ ४ समय स्तुं सम था हं ॥ १६ ॥ उं ह न मू र व द्ध ४ ४
४ ४ ४ वं हा ४ ४ समय स्तुं सम था हं ॥ उं कू न य नी द्ध ४ ४ ४ वं हा ४ ४ समय स्तुं सम था हं ॥ १७ ॥
उं व म न द्ध ४ ४ ४ वं हा ४ ४ समय स्तुं सम था हं ॥ उं न्द न ग ॥ दी य द्ध ४ ४ ४ वं हा ४ ४ समय स्तुं
सम था हं ॥ १८ ॥ उं ग कि न ना द्ध ४ ४ ४ वं हा ४ ४ समय स्तुं सम था हं ॥ उं म व क मि य
द्ध ४ ४ ४ वं हा ४ ४ समय स्तुं सम था हं ॥ १९ ॥ ॥ व ज व न्द द्ध ४ ४ व द्वा य का का म य द्ध ॥ ॥ म व ॥

य नू ॥ उं व ज ना मा य न क म्प द्ध ४ ४ ४ वं हा ४ ४ समय स्तुं सम था हं ॥ २० ॥ उं ल क्री य
द्ध ४ ४ ४ वं हा ४ ४ समय स्तुं सम था हं ॥ उं वा न हि य द्ध ४ ४ ४ वं हा ४ ४ समय स्तुं सम था हं ॥
॥ ० ॥ सं कू नां कू लि मा व द्वा मि व म्प य वि धा म य नू ॥ उं व म्प ४ ४ ४ वं हा ४ ४ समय
स्तुं सम था हं ॥ उं म ल म्प मि य द्ध ४ ४ ४ वं हा ४ ४ समय स्तुं सम था हं ॥ उं व म्प ४ ४ ४ वं हा ४ ४ समय
स्तुं सम था हं ॥ उं ह दि व श ४ ४ ४ लि कू ल्या य का म्प य म्प ४ ४ ४

॥ आगम ॥

कावसंवा ल्य रु गंवा क ल्य मूडया ॥ उं रु ग विष दृष्ट ॥ ४ ॥ वंहा ॥ समय स्वं सम
थाहं ॥ उं ल कृ म्भीय दृष्ट ॥ ४ ॥ वंहा ॥ समय स्वं समथाहं ॥ उं व कृ पिष दृष्ट ॥ ४ ॥
हं वंहा ॥ समय स्वं समथाहं ॥ वज्र व न्ध दृष्ट व न्ध ॥ रु कृ ग हा न मू कि ग ॥ ॥ कृ व
य दृ गु रू मू द्वि ना ग या ज स्य मू डा या ॥ ना ग ॥ धिष दृष्ट ॥ ४ ॥ वंहा ॥ समय स्वं स
मथाहं ॥ उं रु ग व र्ण दृष्ट ॥ ४ ॥ वंहा ॥ समय स्वं समथाहं ॥ उं उ रू ल पिष दृष्ट ॥

३१

॥ मन्त्र ॥

उत्ता २

४ ॥ ४ ॥ वंहा ॥ समय स्वं समथाहं ॥ ल श्रा प रु गि द वी ना स्त्र स्वा धि मू ड या ॥ दर्भ य म
मयं मन्त्रि धा नां य था क मं ॥ समय ह्वा न स त्वा ना म की रु ग वि वि क थ रु ॥ ॥ जि क
ल्व म द ल व रु ध्वा न्वा ध म्मा कृ यं य वं ॥ ॥ य म मू डा रु व क न म का वा व न य र्ध व ॥ ॥ उं
हं मू रु ॥ आ म ॥ स म ॥ ४ ॥ ४ ॥ य य ॥ हं हं ॥ म्म मं ॥ य य ॥ रुं ॥ रुं ॥ रुं ॥ रुं ॥ हं ॥
हा ॥ ४ ॥ ४ ॥ यी य ॥ रु व ॥ व रु वि ॥ रुं ॥ स यि य रुं हा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ स न्म ॥ कं क

॥ आगम ॥

॥ ४ ॥ वज्रमृष्टिसमाधायः शमावाचनमृष्टिगाल्वाकावनसन्वायमृष्टावदलि
कारुवम् ॥ उंरुं ह॥ ५ ॥ वज्रमृष्टिद्वयकृत्वा शमावाचनमृष्टवला ॥ उंम्यं ॥ ३
नामवमृष्टा माध्वधिमिल्लाधममृष्टिका ॥ उंम्यं ॥ ७ ॥ मृष्टाकमवनावध्वरु
कायमृष्टवला ॥ उंम्यं ॥ ८ ॥ वज्रमृष्टिसमाधायशिवास्तुसमरुमं ॥ उंम्यं ॥ ल म
स्वयं क्रियाहोहस्तो ॥ उंरुं ह॥ मृष्टलिमृष्टिसंस्तुथा ॥ १० ॥ उंरुं ह॥ ११ ॥ पका ॥ मृष्ट ॥

३८

मृष्टिक्रियादास्यो ॥ उंरुं ह॥ १२ ॥ वाममृष्टिद्वयवद्धाकर्षुमल्लयधानयम् ॥ उंरुं ह॥
॥ १३ ॥ मृष्टिमृष्ट्यहस्तसंस्तुविह्वनदाययम् ॥ उंरुं ह॥ १४ ॥ ३ ॥ वन्द्यम्
शंकपालसुन्दरिद्वानास्तुहस्तम् ॥ उंरुं ह॥ १५ ॥ ३ ॥ वलितास्तुकावर्तम् ॥ कव
॥ ३ ॥ वन्द्यम् ॥ कवतास्तुनिमृष्ट्यहस्तनरुद्धं ॥ उंरुं ह॥ ३ ॥ वन्द्यम्
वर्तमृष्टिद्विद्वानास्तुधानयम् ॥ उंरुं ह॥ १ ॥ पसार्यवन्द्यहस्तं ॥ उंरुं ह॥ १ ॥

॥ आगा ॥ दिना ॥ संग ॥ सूर्य हस्त नक्षत्र धनुः ॥ उं सूर्य गगन ॥ १ ॥ वामन कुरु वि
 कृत्वा दीना कायं समुत्ति ॥ उला लय सूर्य हस्त नक्षत्रा वादन कस्तु ॥ उं कं हा ॥ ३
 सूर्य मूर्ति समाधाय ॥ धमा हस्त नक्षत्रा ॥ सूर्या ॥ ली हस्त मूर्त्या पृथग् मूला पृथग् वि
 ना ॥ उं मी ॥ ४ ॥ सूर्य मूर्ति समाधाय पृथग् मूर्त्या पृथग् मूर्त्या ॥ उं म ॥ ५ ॥ दक्षिण दक्षिण
 दक्षिण वाम हस्त विधि विधि ॥ ३ ॥ उं कं ॥ सूर्य हस्त नक्षत्रा वादन कस्तु ॥ ॥ स्वव ॥

४०

॥ उं सूर्य ॥ १ ॥ सूर्य मूर्ति समाधाय नक्षत्रा ॥ सूर्या ॥ ली हस्त मूर्त्या पृथग् मूला पृथग् वि
 ना ॥ उं मी ॥ ४ ॥ सूर्य मूर्ति समाधाय पृथग् मूर्त्या पृथग् मूर्त्या ॥ उं म ॥ ५ ॥ दक्षिण दक्षिण
 दक्षिण वाम हस्त विधि विधि ॥ ३ ॥ उं कं ॥ सूर्य हस्त नक्षत्रा वादन कस्तु ॥ ॥ स्वव ॥

॥ अंग ॥ १ ॥ ॥ उर्वर ॥ स्याद्यं भधा क्वायन शुलधुक ॥ ॥ उर्वर ॥ रुक्मविहारां ग्नि
 स्यात्समृद्धि मशुलिनि ॥ ॥ लखमिमूडेवगङ्गाया ॥ उर्वर ॥ ३ ॥ वामम
 श्रीरुदिकुत्वावावनाशुविकायदि ॥ प्रसार्य क्वाययन सूर्यमानयनिरुं रुर्वर ॥ उर्वर
 मूर्ध्नि ॥ रुक्मोक्तेरिह ससवाङ्ग यमकि मवजिही ॥ उर्वर ॥ सूर्यमृष्टिसमावधाय स्वमा
 कं विमकायं ही ॥ उर्वर ॥ ४ ॥ सूर्यमृष्टिललग्ना स्वमाधमां च यां गुलि ॥ नय ॥ ४१ ॥

वधावयनिर्यक्त ममूडायका सिना ॥ उर्वर ॥ यं माह्वानन समाधाय मकि मवजि
 ही ॥ उर्वर ॥ सूर्यमृष्टिलनदयं ही ॥ उर्वर ॥ ५ ॥ उताह्वानमृष्टिसमाधाय स्वमावावनाम
 लिना ॥ वलाकावसमृद्धि रुदिलान रुधावयन ॥ उर्वर ॥ लखयं सूर्ययाहिना
 उर्वर ॥ ववदशुर्वाया निनां उर्वर ॥ ६ ॥ वावनामृष्टिसमाधाय स्वमाकिनी ॥ ७
 उर्वर ॥ रुक्मोक्तेरिह ससवाङ्ग यमकि मवजिही ॥ उर्वर ॥ सूर्यमृष्टिललग्ना स्वमाधमां च यां गुलि ॥ नय ॥

॥ आग ॥ हस्तनसूर्याणादिकृषीदिनः ॥ कबंकरेयवादिवानांमृदायगीयक ॥ उं कबंकरेयवा
 यस्वाहा ॥ १ ॥ यन्माकायादिदवानांमालिः ॥ गनकवावको ॥ उं कर्मकायस्वाहा
 १ ॥ उं खनान्नयायस्वाहा ॥ २ ॥ उं खनवेस्वाहा ॥ २ ॥ उं गमीयनायस्वाहा ॥
 ३ ॥ उं गमिनायस्वाहा ॥ ३ ॥ उं यधकर्मयस्वाहा ॥ ४ ॥ उं यट्कन्यस्वाहा ॥
 ४ ॥ उं यधुधवायस्वाहा ॥ ५ ॥ उं यवाननोस्वाहा ॥ ५ ॥ उं द्विउयानायस्वाहा ॥ ३ ॥

४५

॥ म्वन ॥

उं द्विउधर्मोस्वाहा ॥ ६ ॥ उं यक्रयपियायस्वाहा ॥ ७ ॥ उं यनान्नयस्वाहा ॥ ८
 उं म्कावहीयनायस्वाहा ॥ ८ ॥ उं म्गनकार्यस्वाहा ॥ ८ ॥ उं टिटिनायस्वाहा ॥ ९
 उं टिर्ककयेधोस्वाहा ॥ ९ ॥ उं निववांगायस्वाहा ॥ १० ॥ उं यकामिर्नस्वाहा ॥
 १० ॥ उं उमयजामयायस्वाहा ॥ ११ ॥ उं उदिधिमपियायस्वाहा ॥ ११ ॥ उं रुक्का
 लहलायस्वाहा ॥ १२ ॥ उं रुक्कालार्थस्वाहा ॥ १२ ॥ उं नरुयियायस्वाहा ॥ १३

॥ अंग ॥

ववदहनदिवजयधालन ॥ इंसमूहं स्वाहा ॥ कयदत्रिधहस्तन ॥ उं ॐ उा ॥ १ ॥
वदहनदिवजयधालन ॥ इंसमूहं स्वाहा ॥ कयदत्रिधहस्तन ॥ उं ॐ उा ॥ १ ॥
उं ॐ स्वाहा ॥ मवमूडा रुवत्तया ॥ उंसवायस्वाहा ॥ सूर्यहस्तन दयान ॥ उंवसूर्यस्वाहा ॥ २ ॥
सूर्यहस्तन दयान ॥ उंवसूर्यस्वाहा ॥ सूर्यहस्तन दयान ॥ उंवसूर्यस्वाहा ॥ २ ॥
सूर्यहस्तन दयान ॥ उंवसूर्यस्वाहा ॥ सूर्यहस्तन दयान ॥ उंवसूर्यस्वाहा ॥ २ ॥
कयदत्रिधहस्तन ॥ उं ॐ उा ॥ १ ॥

४७

॥ मव ॥

मुलंसूर्ययानिना ॥ उं लकधर्थस्वाहा ॥ ॥ कलागसूर्ययानिना ॥ उंवकपीयाथेस्वाहा ॥
॥ ववदंसूर्यहस्तनवदहनदिवजयधालन ॥ उं ॐ उा ॥ १ ॥
ववदंसूर्यहस्तनवदहनदिवजयधालन ॥ उं ॐ उा ॥ १ ॥
उं ॐ स्वाहा ॥ मवमूडा रुवत्तया ॥ उंसवायस्वाहा ॥ सूर्यहस्तन दयान ॥ उंवसूर्यस्वाहा ॥ २ ॥
सूर्यहस्तन दयान ॥ उंवसूर्यस्वाहा ॥ सूर्यहस्तन दयान ॥ उंवसूर्यस्वाहा ॥ २ ॥
कयदत्रिधहस्तन ॥ उं ॐ उा ॥ १ ॥

॥ अग्न ॥ पञ्चा ४ कर्पा लास्यादिकं संधा वज्रं कल्पेन संग, घघ द्वा धर्मेन धावयन रु दयन ॥ रु दय
 रुमहाम्पडा साहं क नमवाचयन ॥ अनादि निधन सत्त्वा वज्र सत्त्वा महान ॥ समक त
 इमर्चात्ता वज्र गवधि निर्मम ॥ वज्र मत् ॥ आकास लक्षणं सर्वमाका भय यल कृतं ॥ आ
 कास स नाथागा न ॥ सर्वगुप्त सम नावधि ॥ एहाया न मितांता द स्वता व म् ॥ ४ रु रु हा ४
 मकि ३ ४ हा ४ ॥ घघ द्वा कल्पं कल्पेन वज्र मत्त्वा ल्य रु क्त्वा र्घन धाग म ४ ॥ घघ द्वा रु र्घन धाग म ४ ॥ ॥ त्व ॥

वाद्यथा कल्पेन गावने ४ ॥ श्री कायवागा न म् कि म्भुवकि कादि ॥ ॥ भृङ्ग वका रु ह सिनानि
 कि लावनानि ॥ वा रागुनी लय रु द ह म्भुव वृद्धे नि ॥ घघि म्भुकि म्भुका रु म्भुव वृद्धे नि ॥ खे हांग
 पागु स न कार्म क वज्र घघ द्वा हा हा वादि नि काव कार्म वृद्धे द न ४ ॥ भा रु य दाय रु व ता व वि ॥ म्
 कि क ४ ॥ गं वज्र रु न व वृद्धे कि नि पा द रु ग ॥ श्री काय म्भुकि म्भुव सां गिका वृद्धे धा वि ख द्वां
 रु स म्भु व वृद्धे ग का या व ध वि ॥ सं सा व सा ग व म्भु वृद्धे व वृद्धे म्भु व वि ॥ ल्य वज्र रु कि नि न म्भु व

॥ अग्न ॥ पादयूगा ॥ श्रीवल्लभमूर्ति वरवृषभवागी ॥ उर्ध्वखण्डाङ्गयुगपुर्ध्वपाल धात्री ॥ सर्वभूतस्य तव
 वन्दनं कुरुवावी ॥ वधुबुधा किनी नमस्तु नयादयूगा ॥ श्रीकर्ममूर्ति हविर्गता स नमो घन
 पी ॥ पादयवहाङ्गनस्य कया लधात्री ॥ वागादिह सखव वन्दनः कुरुवावि ॥ वधुबुधा किनी
 नमस्तु नयादयूगा ॥ श्रीसिंहि वांघिवरुजम्बुकी ॥ उलकिनिव ॥ गर्जयथा म सकल इष्टवि
 नासकावी ॥ खडाङ्गमकुम्भधविशुद्धदक्षि ॥ धन इष्टनिह ॥ नयवशुद्धदक्षुद्धागधावि ॥ सर्ववि ॥ ॥ मय ॥

यागरुवः इष्टविनासकावि ॥ लंमाय नृपिनिनमस्तु नयादयूगा ॥ लुङा किनियव वनिह
 धिनिव ॥ कम्पाङ्गिनिह वनपालकुरुय नृपिनि ॥ इष्टा कुरुय वविष्टविनामकावि ॥ सर्वप
 भसप्तबुधा किनियादयूगा ॥ लाम्यामनाह वमनामयमाल्यगीत ॥ सभदगीतधनिः
 हिः सनवाङ्गनृता ॥ नानाविधिरुक्मसमारुमनीकवयं ॥ आलोकहानस गदीयसगन्ध
 ॥ वीर्यादि यगुरुव वधा गिनीगवका ॥ यागानुयाग महानुयागः ॥ सत्यायवाकृमनहः

॥ आरम्भ ॥

॥ ज्ञाना ॥ किं सदाय सन्न ॥ श्रीगुरुययी ० व वय्युक्त कृमयन्नमामि ॥ श्रीमत्पराशरयवम ॥ श्रीवलीलमलि
श्रीगुरुययी ० व वकान्तिनूकलस्य ॥ श्रीवज्रयध्व ॥ वक्षवां वक्षयामागत्य ॥ श्रीह्यानलागयम
श्रीवरागरुक्किलिमि ॥ ॥ किमधुलाजयिममाधिः ॥ ॥ गमः कर्मनू सवजयः ॥ ५०
कुर्याममाहि नः ॥ हृदि वज्रा कृवंध्या ॥ व्यापानायाममयन्निक ॥ महामुद्रादिनाः ॥ सर्वदेवमान
यथाक्रमं ॥ सर्वसिद्धिकयाम ॥ वज्रसत्त्वनराधिनाः ॥ यागाम्बवस्य देहस्य ॥ कयमधुलम ॥ ॥ म्यव ॥

रुमं॥ यथानुक्रमेण गतस्तथा तस्मात्समाहितः॥ वडलाकिनि कान्तकं मूर्ध्नि धीयाः
 काकिनि वकली कर्धनासखा वधुली नग्या स्मिता॥ गीवायां सिंहिनि दत्ति॥ वाघीवा
 रुदय स्मिता॥ रुदय रुन्वकी दत्ती॥ नाहिदल उलकिनी॥ नखा गलाकिनी दत्ती॥ कवमध्व
 दुदिधिनि॥ दन्तया श्रुषिनि दविगुक्क कम्भाजिना स्मिता॥ युक्सी शमिति॥ वधुकाय
 वाक्किरु विन्दु॥ धनी वधि निमांसि रुजं घातल दय न्यसम्॥ उगीरु लिनी हितसी वा

॥ आगम ॥ वंधुमिनिनादिका ॥ कया लीवजी कूंही कुसंखि न्यादि किनाठिका ॥ लास्याह दयदस
 स्ठाग न्धश्चाद विस्तना कव ॥ वीना कश्च यदस स्थायुष्मा मिलसि विनय भगुगी माः
 जिह्वायुद स स्थागुध धूपाहु विनय भग ॥ नृणां वा रुदय ह्या दिया व रुदय न्यम ॥ ३१
 नृ ॥ हविष मादयोश्चाश्वा वा म कथय वस्त्रि मा ॥ दस वायु यद स वृद्ध था कम कलक
 रुद वाना न् ॥ नृणु वि लाय न स्वद स न ल्यथ नृद व सर्व संपूर्ण म ह्युल ॥ पृथ्वी दि रुक् ॥ ॥ मय ॥

मनेव अर्था विधाय था कम ४ लास्याद रु वि धाय जा ४ म्भु कं कर्था समाहि न ४ ॥ वज्र रु
 स व अ स ल्क ॥ ला मं द द स न न ॥ अ रु व रु व स व र्ध वि ला मि नि च ॥ रु वा रु व वि म
 रु म ॥ म रु वि रु वि स य ॥ रु रु वि रु व स र्व स म वि वि रु अ न ॥ दा न्दा म्भु लि ग न रु रु
 स लि ला क मि स न ॥ ध र्म रु द रु म्भु पा वि रु भा रु वि या स न ॥ स रु सां सा व दि म हि स
 भा रु वि क रु स न ॥ स र्व संह व न् रु रु नि म रु वि न वि मा य ॥ प रु वि रु रु व रु रु रु

॥ आगा ॥ ४ सूर्यहस्तं दन्त्याकावसंस्थिता ॥ १२ ॥ यसायसूर्यहस्तं दुःखमाह्वानमसीलयन्
 मुख्यागुमसंधार्य हसिताया लज्जनं मम ॥ १३ ॥ यसायदक्षिणहस्तं ॥ जनाकथयिसंस्थि
 तं ॥ भुगावाद्यादिवस्त्वधुना वामकायि कलिलया ॥ १४ ॥ वज्रसूर्यकायां तु वज्रयध
 कत्यवः ॥ कादमडासमाक्रान्ता तापिकयं किनोक्तम् ॥ १५ ॥ यसायवज्रवधुः स्थायय
 द्गहसिधुः सहकावसमायुक्तं यामुद्राविधियम् ॥ १६ ॥ वाममूर्ध्नि दृष्टं वध्वा लाव ॥ १७ ॥

नायवमूर्ध्नि कं वधकाकावसंस्थितं सवावाक्यसावधकं ॥ कावतसमाहकं मृडाख्याना क
 वानका ॥ १८ ॥ कृत्स्नसूर्यमया गह मृडयकवृद्धा मथा ॥ १९ ॥ मालिङ्गधालिनय सन्तसं
 हाकं वन ॥ २० ॥ यधमाऊलिमावंध मृगाधर्मदभना ॥ २१ ॥ माद्युजादिसर्वेषां कि
 द्वायामक भुविकां ॥ ममितात्मक भुक्तं वज्रविक्रावयन् वज्रमूर्ध्नि दृष्टं वध्वा यष्टनया
 मयम् ॥ रुद्रवयमनसर्वं दृष्टा स्वकावाचनं शृणुत्वा अनयामुद्रया वध्वा देवताभासनाय वै ॥ २२ ॥

॥ जाग ॥ वरुं विस्मयाधियमिहं ॥ ३६ ॥ २ सवजा गधविहं ॥ ३७ ॥ ४ स्वाहा ॥ ४८ ॥ ५ सार्थदक्रिधंयाधि
 पम ॥ ५९ ॥ ६ ननधियुधम् ॥ ६० ॥ ७ नलिगुम् ॥ ६१ ॥ ८ ममावल् ॥ ६२ ॥ ९ वाममल्कि ॥ ६३ ॥ १० नमर्जनी ॥ ६४ ॥ ११ उवकवल् ॥ ६५ ॥ १२ मभानद
 वायव्वकन्दवध्वन ॥ ६६ ॥ १३ गुधयामिया ॥ ६७ ॥ १४ धवय ॥ ६८ ॥ १५ थक्रु ॥ ६९ ॥ १६ गुन्यागा ॥ ७० ॥ १७ विविधम ॥ ७१ ॥ १८ तांजनल् ॥ ७२ ॥ १९ वगकल् ॥ ७३ ॥ २०
 मोमामर्जनीदिविधम ॥ ७४ ॥ २१ कृष्णवृद्धमहावृद्ध ॥ ७५ ॥ २२ दवदल् ॥ ७६ ॥ २३ मनस्वि ॥ ७७ ॥ २४ कृष्णकाला ॥ ७८ ॥ २५ लि ॥ ७९ ॥ २६ विरुक्ति
 नदामविनायक ॥ ८० ॥ २७ वामुद्रायवविहलि ॥ ८१ ॥ २८ उमादविह्लु ॥ ८२ ॥ २९ संतव ॥ ८३ ॥ ३० जयावविजयावव ॥ ८४ ॥ ३१ जिनाम ॥ ८५ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

यवाजिना ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥

॥ मन्त्र ॥

४॥ अंगमयवदयाकृत्यसंसारलोधकः॥ आनादिनिधनायकयात्कावसम्पि ४॥
 रुमडाआगसमयकलकलमहामहः॥ वरुकाकमहाकाककलायलयदाव्यकः॥
 महाविनयइष्टायव्यंगोडडकयकः॥ कथागकमहासिद्धिधर्मकर्ममहावलस
 इमंसत्कर्मयथावाधिविरुविश्वधकः॥ सर्वगुद्धिमयमयेहाययमहधनः॥ वाग
 गुद्धिसमाध्वयविश्ववागमहध्वः॥ आकासानकनिन्यार्थः॥ सर्वरुममहावलः॥

॥ ज्ञान ॥ विरुक्ता विरुक्ता सर्वासाय विपुला ४ नमस्तु नमस्तु स्वनमानम ॥ **॥ हव**
 ग्राहं त्याय यद्यामि वज्रमन्त्रा यमिद्विना ॥ ४ ॥ **॥ नमिद्विना दन ॥**
॥ नमिद्विना विधि ॥ **॥ पूर्ववत् सर्वयुक्ता महथ ॥ युक्ता कृत्वा गनान ॥ दहस्त्वा गव**
सर्वग ॥ **॥ खाद्यराक्षसं थाययं न्य ॥ धियव नयं यम ॥ मम नैर्लभुमायुग ॥ सूर्याह**
स्त्रिभाषा वविहानाना मिवास्यां सु माली कृष्णं चम रुन ॥ गगानमनु ॥ उह ४ हा ४ **॥ मव ॥**

की ४ श्री ४ रुं अ ४ स्वा हा ॥ अकृमानि विविधानि विमखन दुय च ३ धा ॥ वन्दुसस्त्राया
गाद्युनि सूर्याह स्त्रन भा धये ग ॥ सर्वतावनगा पाय ॥ गगायं मनु ॥ उं श्री रुं धं रुं अ ४ स्वा
हा ॥ षट्पादं कृमस्तु ४ कर्मवडी विधि ह्या ॥ दाघय गत्य कृत गनम धुयुव सर्व ॥ य
म तां जनमंगुक्षे सधा वयय विदाय यम ॥ सर्वतावनगाखा मनुमडाय हाव वन ॥ यविल
भाहिस्म धर्म नहि संतावनम ॥ वस्त्रन कृत्वा वव धुल ॥ कसदा वखड ॥ वेवं विहा

॥ अंग ॥

पयन्यागि-कामलावक्ययुक्तं सूर्यभयमसंगुक्तं वडवडं यथागमः ॥ अहयकृत्यथाग
ध-वृत्तांगमथामदाहवक्तुं स्वायत्तधर्ममसंगुक्तं मलामयमव-लावालावविवर्जिता-धनं
महकलिसुवक्तुं ॥ गमायाहकथात्मा-लावयत्समसाहिता ॥ सूर्यहस्तसिद्धिः ४४ यथाभय
कृत्तुं ॥ दिगुक्ताः कवमक्तुं ॥ विंशत्युक्तं समुद्धिता ॥ वेदाईसहभाषाके-मध्यावदुवायमं ३
कायमध्यायम-यकवृद्धाहिमधिका ॥ अनामाहुयावदव-धेधमहायत्नागममद्वयं ॥ पा-

५०

॥ अंग ॥

कस्यादिमिति मक्तुं ॥ विलावयक्तुं ॥ अनजिह्वायमादया-लुदिमृष्टिललाटक
पञ्चाक्यथासखक्याद-न्याभयनदुयमथायक्तुं ॥ नवंमन्थानासंगुक्तं यथापायसलाव
गानक्यान्पाकुमास-धायर्वशायथासखसखनेव-विहवक्तुं यथामृष्टिः ४४ यथावि
सर्जनकाल-सहावात्सल्यमुक्तिः ४४ यत्किञ्चित्संज्ञा-ध्व-विमयदालकाजनप
वायवाययुक्तं न-धाययुक्तं ॥ नृवामापर्यामस्त-नभावनेयदाययक्तुं ॥ व

[illegible]

DH 262

धर्मरत्न बज्जाचार्य सुरत श्री महाविहार